साप्ताहिक
Live not just breaTHE

# दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 20 ( प्रति बुधवार ), इन्दौर, 25 दिसंबर 2024 से 31 दिसंबर 2024 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

# सुप्रीम कोर्ट ने खारिज किया एनजीटी का आदेश, कहा- प्राकृतिक न्याय का उल्लंघन हुआ

**नई दिल्ली सुप्रीम कोर्ट ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल का एक आदेश खारिज कर दिया है। आदेश को खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ट्रिब्यूनल को सभी तथ्यों और परिस्थितियों पर विचार करके अपने निर्णय पर पहुंचना होता है, और वह किसी राय को आउटसोर्स नहीं कर सकता और उस पर अपना आदेश नहीं दे सकता। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ( एनजीटी ) के अप्रैल 2021 के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस बीआर गवई और केवी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि ट्रिब्यूनल ने एक बड़ी गलती की है, क्योंकि उसने अपना निर्णय केवल एक संयुक्त समिति की रिपोर्ट के आधार पर लिया है।**

पीठ ने कहा, किसी ट्रिब्यूनल को किसी मामले के तथ्यों और परिस्थितियों पर पूरी तरह से विचार करके ही अपना फैसला देना होता है। वह किसी राय को आउटसोर्स नहीं कर सकता और फिर उस पर अपना फैसला नहीं दे सकता। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने एनजीटी के आदेश को खारिज कर दिया। एनजीटी के आदेश के खिलाफ एक फर्म ने याचिका दायर की थी, जिसे एनजीटी ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के मानदंडों का उल्लंघन करने का दोषी ठहराया गया था और उस पर जुर्माना लगाया था। शीर्ष अदालत ने पाया कि एनजीटी ने शुरू में फर्म के प्लांट की जांच राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा करने का निर्देश दिया था, जिसने अपने निष्कर्ष दिए और फिर न्यायाधिकरण ने एक संयुक्त समिति नियुक्त की, जिसकी सिफारिशों पर उसने कार्रवाई की और आदेश पारित कर दिया। पीठ ने कहा, एनजीटी द्वारा की गई एक और बड़ी गलती यह है कि उसने अपना फैसला केवल संयुक्त समिति की रिपोर्ट के आधार पर लिया है। शीर्ष अदालत ने पाया कि फर्म को न तो एनजीटी के समक्ष कार्यवाही में पक्ष बनाया गया था और न ही संयुक्त समिति के समक्ष, और जब उसने पक्षकार बनने के लिए आवेदन दायर किया, तो न्यायाधिकरण ने उसे खारिज कर दिया। पीठ ने कहा, ऐसा लगता है कि एनजीटी द्वारा नियुक्त संयुक्त समिति ने भी अपीलकर्ता को कोई नोटिस नहीं दिया और न ही सुनवाई का अवसर दिया गया। यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन है। पीठ ने कहा कि, एनजीटी द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से एक व्यक्ति की निंदा करने जैसा है, जिसकी सुनवाई नहीं की गई। न्यायाधिकरण के आदेश को रद्द करते हुए पीठ ने मामले को नए सिरे से विचार के लिए फिर से एनजीटी को वापस भेज दिया।

## बेंगलुरू में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का उच्च स्तर- जांच के लिए संयुक्त समिति गठित

**बेंगलुरू नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ( एनजीटी ) ने 19 दिसंबर, 2024 को तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक संयुक्त समिति के गठन का आदेश दिया है। मामला कर्नाटक के बेंगलुरु में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड के उच्च स्तर से जुड़ा है। इस समिति में कर्नाटक राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ( केएसपीसीबी ), केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ( सीपीसीबी ) और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के एकीकृत क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु के क्षेत्रीय निदेशक शामिल होंगे।**

समिति साइट का दौरा करने के साथ-साथ प्रासंगिक जानकारी एकत्र करेगी और दो महीनों के भीतर ट्रिब्यूनल की दक्षिणी बेंच के सामने एक तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। गौरतलब है कि छह दिसंबर, 2024 को अंग्रेजी अखबार दक्कन हेराल्ड में प्रकाशित एक खबर के आधार पर अदालत ने इस मामले को स्वत: संज्ञान में लिया है। इस खबर में कहा गया है 2023 के दौरान बेंगलुरु में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का वार्षिक औसत स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा तय मानकों से करीब दोगुना था। इस दौरान 295 दिनों तक नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का उच्च स्तर दर्ज किया गया। वहां सिटी रेलवे स्टेशन क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित रहा, जहां 2023 में नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का स्तर 295 दिनों तक डब्ल्यूएचओ द्वारा निर्धारित मानकों से अधिक था। वहीं अन्य प्रदूषित क्षेत्रों में होमबेगौड़ा नगर (125 दिन), बापूजी नगर (120 दिन) और पीन्या (119 दिन) शामिल थे।

यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का उच्च स्तर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। यह अस्थमा, सूजन और सांस लेने में जलन के जैसे जोखिमों को बढ़ा सकता है। इतना ही नहीं यह फेफड़ों के विकास को बाधित कर सकता है और मौजूदा स्थिति पर बुरा असर डाल सकता है। इसकी वजह से एलर्जी की समस्या बढ़ सकती है। साथ ही सांस से जुड़ी समस्याएं, मृत्युदर में इजाफा, हृदय रोग और यहां तक की फेफड़ों के कैंसर का जोखिम भी बढ़ सकता है। गौरतलब है कि देश में सिर्फ बेंगलुरु ही नहीं कई अन्य शहरों में भी प्रदूषण की स्थिति बेहद खराब बनी हुई है।

# ऑस्ट्रेलिया में पिछले पांच सालों में सबसे गर्म रह सकती हैं इस बार गर्मियां, लू पहले ही दे चुकी है दस्तक

**सिडनी। आशंका है कि ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश हिस्सों में इस बार पिछले पांच वर्षों में सबसे ज्यादा गर्मी पड़ सकती है। पारा पहले ही 40 डिग्री सेल्सियस के पार जा चुका है। जानकारी मिली है कि कुछ इलाकों में तापमान दिसंबर के मध्य में सामान्य से आठ से 16 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया है।**

ऑस्ट्रेलिया के मौसम विज्ञान ब्यूरो के वरिष्ठ मौसम विज्ञानी डीन नैरामोर ने प्रेस को जानकारी दी है कि गर्म मौसम की वजह देश भर में फैला %फ्रंट% है जो गर्म, शुष्क और तेज हवाएं लेकर आता है। उनका कहना है कि, यह निश्चित रूप से बेहद असामान्य है, विशेषकर उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के मध्य हिस्सों के लिए, जहां हम आमतौर पर मानसूनी गतिविधियां देखना शुरू कर देते हैं। जंगल में आग लगने के बढ़ते खतरे को देखते हुए, अधिकारियों ने देश भर में उन गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगा दी है, जिनसे आग लगने की आशंका हो। विक्टोरिया की कंट्री फायर अथॉरिटी ने 26 दिसंबर को उन सभी घटनाओं पर पूरी तरह रोक लगा दी है, जिनसे आग लगने का खतरा पैदा हो सकता है। अथॉरिटी के मुख्य अधिकारी जेसन हेफरनन ने कहा कि यह विक्टोरिया भर में अत्यंत भीषण अग्नि दिवस होगा। हेफरनन का कहना है, मंगलवार को राज्य में फिर से चरम स्थितियां पैदा होने की आशंका है। हम उस दिन राज्य के उत्तर-पश्चिमी इलाकों में आग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने पर चर्चा करेंगे। ऑस्ट्रेलिया, जिसका एक बड़ा हिस्सा निर्जन है, उसने हाल के इतिहास में दुनिया की सबसे भयानक आग का सामना किया है। इस आग से न केवल वनस्पति को नुकसान होता है, साथ ही यह वन्यजीवों के अस्तित्व को भी खतरे में डाल देती है। इससे बड़ी मात्रा में ग्रीन हाउस गैसें भी उत्सर्जित होते हैं जो ग्लोबल वार्मिंग की स्थिति को बद से बदतर बना देती हैं।इन विषम मौसमी परिस्थितियों के चलते ऑस्ट्रेलिया में क्रिसमस का जश्न प्रभावित हो सकता है, क्योंकि इसकी वजह से बहुत से लोग शायद खुले में कार्यक्रम आयोजित नहीं करना चाहेंगे। हालांकि गर्मियां ऑस्ट्रेलियाई क्रिसमस समारोहों का एक आम हिस्सा हैं, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग की वजह से जलवायु में आने वाले बदलाव उत्सव के उत्साह को कम कर सकते हैं।

# अटल जी के नदी जोड़ो स्वप्न से मिली जनगण को सौगात

**भोपाल**

**उजियारे में, अंधकार में,**
**कल-कछार में, बीच धार में,**
**क्षणिक जीत में दीर्घ हार में,**
**जीवन के शत-शत आकर्षक,**
**अरमानों को ढलना होगा,**
**कदम मिलाकर चलना होगा।।**

कदम मिलाकर चलने का उद्घोष करने वाले भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी की आज 100वीं जयंती है। भारत निर्माण के दृष्टा श्रद्धेय श्री अटल जी को शत-शत नमन।

श्रद्धेय अटल जी ने संघ के स्वयंसेवक से लेकर राष्ट्रधर्म के संपादक, जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के दायित्वों के बीच कार्यकर्ताओं की पीढ़ियां निर्मित कीं। व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण की उनकी परिकल्पना के सभी पक्षों ने देश को आधार प्रदान किया।

धरती को सुजलाम् सुफलाम् करने और समृद्धि के नये आयाम स्थापित करने के लिये श्रद्धेय अटल जी ने लगभग 20 वर्ष पूर्व नदी जोड़ो अभियान की संकल्पना की थी। उन्होंने देशभर की नदियों को जोड़कर बिखरी पड़ी जलराशि के समुचित प्रबंधन का सपना देखा था।उनका सपना था, देशभर की नदियां आपस में जुड़ें और जल की एक-एक बूंद का उपयोग समाज और राष्ट्र के लिये हो। श्रद्धेय अटल जी 100वीं जयंती पर आज मध्यप्रदेश में केन-बेतवा से विश्व की पहली नदी जोड़ो परियोजना द्वारा जल सुरक्षा का स्थायी समाधान करने की दिशा में महती कदम उठाया जा रहा है। मुझे यह बताते हुये प्रसन्नता है कि आज हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री और वर्तमान पीढ़ी के भागीरथ श्री नरेन्द्र मोदी जी खजुराहो में देश की पहली, महत्वाकांक्षी केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना का शिलान्यास करेंगे। इसी के साथ श्रद्धेय अटल जी का नदियों को आपस में जोड़ने का संकल्प और समृद्धि का सपना मूर्तरूप लेगा।मध्यप्रदेश नदियों का मायका है, सैकड़ों नदियों की विपुल जलराशि से समृद्ध है। प्रदेश की नदियों के आशीर्वाद से यह बहुउद्देशीय परियोजना बुंदेलखंड की जीवन रेखा साबित होगी। यह परियोजना छतरपुर और पन्ना जिले में केन नदी पर विकसित की जा रही है। इसमें पन्ना टाइगर रिजर्व में केन नदी पर 77 मीटर ऊंचाई एवं 2.13 किलोमीटर लंबाई के दौधन बांध एवं 2 टनल का निर्माण होगा। बांध में 2 हजार 853 मिलियन घन मीटर जल का भंडारण किया जायेगा। इसमें दाब युक्त सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के माध्यम से मध्यप्रदेश के 10 जिले पन्ना, दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर, निवाड़ी, सागर, रायसेन, विदिशा, शिवपुरी और दतिया के लगभग 2 हजार ग्रामों में 8.11 लाख हेक्टेयर में सिंचाई हो सकेगी और लगभग 7 लाख किसान परिवार लाभान्वित होंगे। मध्यप्रदेश की 44 लाख और उत्तर प्रदेश की 21 लाख आबादी को पेयजल की सुविधा मिलेगी और 103 मेगावॉट जल विद्युत एवं 27 मेगावॉट सौर ऊर्जा का उत्पादन होगा। इसका लाभ संपूर्ण मध्यप्रदेश को मिलेगा।

केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना से बुंदेलखंड के हर खेत तक सिंचाई के लिये पानी पहुंचेगा। प्रदेश में बिजली, कृषि, उद्योग और पेयजल के लिये भरपूर पानी उपलब्ध होगा। खेत को पानी मिलने से फसलों का अमृत बरसेगा। किसानों के जीवन में खुशहाली आयेगी और बुंदेलखंड की तस्वीर तथा तकदीर बदलेगी। इस परियोजना से खेती-किसानी, उद्योग, व्यवसाय और पर्यटन को गति मिलेगी जिससे पलायन रुकेगा और नागरिकों का जीवन खुशहाल होगा। जलराशि की विपुलता के साथ बाढ़ तथा सूखा, दोनों समस्याओं का समाधान होगा।

हमारा संकल्प है विरासत के साथ विकास। इसी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते हुएपरियोजना में ऐतिहासिक चंदेलकालीन 42 तालाबों को सहेजने का कार्य किया जायेगा।यह तालाब वर्षाकाल में जल से भर जायेंगे। इससे धरती का जल स्तर बढ़ेगा जिसका लाभ लोगों को मिलेगा।

# प्रजातियों के अस्तित्व के लिए बेहद जरूरी हैं बुजुर्ग बुद्धिमान जीव, लेकिन बढ़ती महत्वाकांक्षा की चढ़ रहे हैं भेंट

**मुंबई। इंसानों और दूसरे जीवों में उम्र बढ़ने का अर्थ है उनके जैविक कार्यों में गिरावट आना। लेकिन इस गिरावट से उलट हम इंसानों की तरह ही दूसरे जीव भी उम्र बढ़ने के साथ बुद्धि, ज्ञान और अनुभव अर्जित करते हैं। शोधों से भी पता चला है कि हम इंसानों की तरह ही दूसरे जीव उम्र बढ़ने के साथ कहीं ज्यादा समझदार हो जाते हैं। पृथ्वी पर बहुत से जीव ऐसे हैं जो लम्बा जीवन काल व्यतीत करते हैं, उदाहरण के लिए ग्रीनलैंड शार्क करीब चार सदियों तक जीवित रह सकती है। बिगमाउथ बफेलो मछली 127 साल, गैलापागोस के विशाल कछुए 100 से 150 साल, हाथी 70 से 80 वर्ष, खारे पानी के मगरमच्छ 100 से अधिक वर्ष, लाल समुद्री अर्चिन करीब 200 साल, बोहेड व्हेल 200 वर्षों तक जीवित रह सकती है।**

इसी तरह रफआई रॉकफिश की उम्र 200 से ज्यादा वर्ष हो सकती है। मीठे पानी की सीप भी 200 वर्षों तक अस्तित्व में रह सकती है। ट्यूबवर्म 300 वर्षों तक जीवित रह सकते हैं। आपको जानकार हैरानी होगी की ब्लैक कोरल की उम्र 5,000 वर्षों की हो सकती है, जबकि ग्लास स्पंज 10,000 वर्षों से अधिक समय तक बने रह सकते हैं। प्रकृति ऐसे अनेकों जीवों से भरी है जो अपने लम्बे जीवन काल के लिए जाने जाते हैं। देखा जाए तो उनके यह उम्र महज एक आंकड़ा नहीं है, जैसे-जैसे यह जीव बढ़ती उम्र के साथ परिपक्व होते हैं वे अपनी जीवन में अर्जित ज्ञान और अनुभवों के आधार पर अलग-अलग व्यवहार करते हैं, वे अपने पर्यावरण के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करते हैं और अक्सर उस ज्ञान को आने वाली पीढ़ियों के लिए संजोए रहते हैं और उन तक पहुंचाते हैं। ऐसे में उनका यह ज्ञान और अनुभव आने वाली नस्लों को धरोहर के तौर पर सौंप दिया जाता है। यह प्रकृति है, जो सदियों से इसी तरह चल रही है, हालांकि समस्या तब शुरू होती है जब हम इंसान इन बुजुर्ग बुद्धिमान जीवों का अपने फायदे के लिए शिकार करते हैं, या उनके आवास को नुकसान पहुंचाते हैं। इसे समझने के लिए चार्ल्स डार्विन विश्वविद्यालय से जुड़े शोधकर्ताओं के नेतृत्व में एक नया अध्ययन किया गया है, जिसके नतीजे जर्नल साइंस में प्रकाशित हुए हैं। अध्ययन इस बात को समझने पर केंद्रित था कि बुजुर्ग जीव पारिस्थितिकी और संरक्षण को कैसे प्रभावित करते हैं। अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने 9,000 से अधिक शोधों का विश्लेषण किया है। साथ ही इसमें मशीन लर्निंग मॉडल की भी मदद ली गई है। शोधकर्ताओं ने चेताया है कि पृथ्वी पर इन बुजुर्ग जीवों की संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। देखा जाए तो अधिकांश अध्ययन उम्र बढ़ने के नुकसानों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन उभरते हुए साक्ष्य दर्शाते हैं कि कैसे यह बुजुर्ग, बुद्धिमान जीव आबादी और पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान करते हैं। कहीं न कहीं इसका फायदा हम इंसानों को भी मिलता है, लेकिन दु:ख की बात है कि उनका यह योगदान घट रहा है, क्योंकि धीरे-धीरे यह बुजुर्ग जीव अपने प्राकृतिक आवास से गायब होते जा रहे हैं। अब बहुत कम जीव बुढ़ापे तक जीवित रहते हैं और जो जीवित रहते हैं उनपर भी इंसानों का शिकार बन जाने का खतरा मंडराता रहता है, क्योंकि हम इंसान जिस चीज के लिए इन प्रजातियों का शिकार करते हैं यह उसके धनी होते हैं। उदाहरण के लिए कुछ जीवों को उनके सींग, कुछ को दांत के लिए निशाना बनाया जाता है, जो इन बुजुर्ग जीवों में सबसे बड़े होते हैं। बेतहाशा मछली पकड़ने से समुद्र में बुजुर्ग मछलियां बेहद कम हो गई हैं, जबकि हाथी जैसे जानवरों का अवैध शिकार किया जा रहा है। आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं, जांची गई समुद्री आबादी में से 79 से 97 फीसदी में इन बुजुर्ग मछलियों की संख्या में गिरावट आई है। अनियंत्रित मछली पकड़ने और जलवायु परिवर्तन से लंबे समय तक जीवित रहने वाले कोरल और स्पंज को भी नुकसान हो रहा है, यह नुकसान इतना बड़ा है कि इसकी भरपाई हमारे जीवनकाल में तो नहीं हो सकती। रिसर्च के मुताबिक ठंडे खून वाले जीव, जैसे कि मछली और सरीसृप, उम्र बढ़ने के जीवन भर बढ़ते रहते हैं। इसका मतलब है कि यह जीव, युवाओं से कहीं ज्यादा बड़े हो सकते हैं। बड़े होने के अपने फायदे हैं, खासकर जब बात भोजन खोजने या प्रजनन की आती है। यह व्यापक रूप से ज्ञात है कि मछलियों और कई अन्य एक्टोथर्म जीवों में उम्र के साथ संतानों की संख्या बढ़ती है। लेकिन हाल ही में यह भी सामने आया है कि कुछ मछलियों और समुद्री मादा कछुए बढ़ती उम्र के साथ-साथ तेजी से ज्यादा संताने पैदा करती हैं। इनके बच्चों के जीवित रहने की संभावना भी अधिक होती है। इसी तरह कुछ अन्य प्रजातियों में भी बड़ी उम्र की मादाओं से पैदा होने वाली संतानों के जीवित रहने की दर अधिक हो सकती है। उदाहरण के लिए पक्षियों में बड़ी उम्र के माता-पिता अक्सर अपने बच्चों के लिए अधिक भोजन और आवास देते हैं, जिससे नवजातों के जीवित रहने की दर में सुधार होता है। इसी तरह कुछ प्रजातियों में यह बुजुर्ग जीव महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिकाएं निभाते हैं। यह अपने ज्ञान की मदद से प्रवास आदि के समय में अपने समूहों का नेतृत्व करते हैं। इसी तरह यह झुण्ड को खतरों से बचाए रखने और आक्रामक व्यवहार को नियंत्रित करने में भी मदद करते हैं। उनके निर्णय और व्यवहार सीधे तौर पर अगली पीढ़ियों के अस्तित्व को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए हाथियों में बुजुर्ग मादाएं और दादी-नानी की तरह ज्ञान का भंडार होती हैं। ऐसा ही कुछ व्यवहार व्हेल में भी होता है। इनमे समझदार बुजुर्ग मादाएं जो प्रजनन नहीं करती है वो अपने झुण्ड की भोजन खोजने में मदद करती हैं, जब भोजन दुर्लभ होता है तो वो उनके अस्तित्व के लिए बेहद मायने रखता है। ऐसा ही कुछ व्यवहार दूसरे जीवों में भी देखने को मिला है जो अपने ज्ञान को अपनी अगली पीढ़ियों तक पहुंचाते हैं। पक्षी, स्तनधारी और मछलियां तक अपने ज्ञान को आने वाली पीढ़ियों को देती हैं। यह जीव अपने जीवन भर में संजोए ज्ञान और अनुभवों का उपयोग बेहतर निर्णय लेने में करते हैं। देखा जाए तो जो प्रजातियां लम्बे समय तक जीवित रहती हैं वो धीमी गति से बढ़ती और परिपक्व होती हैं, इनके प्रजनन की दर भी धीमी होती है। जो इन्हें विलुप्त होने के लिए कहीं ज्यादा संवेदनशील बना देता है। इनकी बुजुर्ग आबादी जो पर्यावरण में आने वाले बदलावों का सामना करने के काबिल होती हैं और पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता को बनाए रखने में मददगार होती है। इसी तरह यह जलवायु में आते बदलावों का कहीं बेहतर तरीके से सामना कर सकती हैं। यह बाढ़, सूखा, जैसी चरम मौसमी घटनाओं और खराब पर्यावरणीय स्थितियों से अपनी प्रजाति को बचाए रखने के काबिल होती हैं। हालांकि इनके खत्म होने साथ-साथ प्रजाति पर खतरा बढ़ जाता है। रिसर्च से पता चला है कि यह बुजुर्ग, बुद्धिमान जीव न केवल अपनी आबादी, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन जिस तरह से पृथ्वी पर मौजूद यह बुजुर्ग और बुद्धिमान जीव इंसानी महत्वाकांक्षा की भेंट चढ़ रहे हैं, उससे प्रजातियों के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो सकता है। हालांकि जीवों और जैव विविधता के संरक्षण के लिए किए जा रहे उपायों में इन बुजुर्ग और बुद्धिमान जानवरों पर विचार नहीं किया जाता। ऐसे में शोधकर्ताओं ने इन जीवों के संरक्षण पर जोर दिया है।

# एनजीटी ने आदेश का पालन न करने को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार पर 10 हजार रुपये का जुर्माना लगाया

**नयी दिल्ली,** राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने एक जल निकाय के जीर्णोद्धार से संबंधित मामले में अनुपालन रिपोर्ट दाखिल न करने को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया। हरित अधिकरण, उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के कदौरा नगर पंचायत क्षेत्र में स्थित सदर तालाब के जीर्णोद्धार से संबंधित याचिका पर सुनवाई कर रहा था। न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल की पीठ ने 20 दिसंबर को कहा कि सितंबर में अधिकरण के निर्देशों के अनुपालन में किसी भी पक्ष या प्रतिवादी ने अनुपालन रिपोर्ट दाखिल नहीं की। अधिकरण ने कहा, इन परिस्थितियों में हमारे पास नगर पंचायत कदौरा और उत्तर प्रदेश सरकार पर 10,000 रुपये का अतिरिक्त जुर्माना लगाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। वे एक महीने के भीतर अपना जवाब दाखिल कर सकते हैं। हरित अधिकरण ने कहा, बोर्ड ने कोई अनुपालन रिपोर्ट भी दाखिल नहीं की इसलिए 5,000 रुपये के जुर्माने के भुगतान के साथ-साथ जवाब दाखिल करने के लिए दो सप्ताह का अतिरिक्त समय दिया जाता है।

# मेघालय का बर्नीहाट बना देश का सबसे प्रदूषित शहर, दिल्ली को भी छोड़ा पीछे

**आइजोल देश में मेघालय का बर्नीहाट सबसे प्रदूषित शहर बन गया है, जहां आज वायु गुणवत्ता सूचकांक 365 रिकॉर्ड किया गया। मतलब की वहां की फिजा में घुला जहर लोगों को बीमार बना देने के लिए काफी है। प्रदूषण के मामले में आज दिल्ली दूसरे स्थान पर रहा, जहां एक्यूआई 336 रिकॉर्ड किया गया है। गौरतलब है कि कल दिल्ली में हवा सबसे ज्यादा खराब थी, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 369 रिकॉर्ड किया गया था।**

इसी तरह देश के छोटे बड़े सात अन्य शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर बेहद खराब बना हुआ है। इन शहरों में सिरोही, बूंदी, देवास, जालौर, पाली, हाजीपुर और बिहार शरीफ शामिल हैं। हालांकि राहत की बात यह रही कि कल से देश में %बेहद खराब% हवा वाले शहरों की संख्या में 18 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई है। ताजा रुझानों के मुताबिक अगरतला में वायु गुणवत्ता सूचकांक 216 दर्ज किया गया। अगरतला की तरह ही देश के छोटे बड़े 52 अन्य शहरों में वायु गुणवत्ता %खराब% बनी हुई है, जहां एक्यूआई 200 से 300 के बीच दर्ज किया गया है। आज देश के जिन शहरों में वायु गुणवत्ता %खराब% दर्ज की गई, उनमें अगरतला, अंगुल, आसनसोल, औरंगाबाद (बिहार), बांसवाड़ा, बारां, बारबिल, बाड़मेर, बैरकपुर, बेगूसराय, भीलवाड़ा, भोपाल, बीकानेर, बिलीपाड़ा, चरखी दादरी, चित्तौड़गढ़, चुरू, दौसा, धनबाद, डूंगरपुर, गाजियाबाद, ग्रेटर नोएडा, गुरूग्राम, हल्दिया, हनुमानगढ़, हावड़ा, जयपुर, जैसलमेर, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, कटिहार, कोटा, महाड, मंडीदीप, नागौर, नोएडा, पटना, पीथमपुर, प्रतापगढ़, पूर्णिया, रायरंगपुर, रतलाम, सागर, सहरसा, सासाराम, सीकर, सिंगरौली, श्रीगंगानगर, टोंक, उदयपुर, वापी शामिल हैं। चिंता की बात यह है कि कल से देश में %खराब% हवा वाले शहरों की गिनती में 33 फीसदी से ज्यादा का इजाफा हुआ है। वहीं दूसरी तरफ आज देश में आइजोल की हवा सबसे साफ रही, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 24 दर्ज किया गया। ऐसे में यदि देश के सबसे प्रदूषित शहर बर्नीहाट की तुलना आइजोल से करें तो वहां स्थिति 15 गुना ज्यादा खराब है। आइजोल की तरह ही देश के 21 अन्य शहरों में वायु गुणवत्ता साफ बनी हुई है। इन शहरों में हुबली, कडपा, कलबुर्गी, कारवार, कोप्पल, मदिकेरी, पुदुचेरी, राजमहेंद्रवरम, रानीपेट, ऋषिकेश, त्रिशूर, वाराणसी, विजयपुरा आदि शामिल हैं। राहत की बात यह रही कि कल से देश में साफ हवा वाले शहरों की गिनती में करीब 16 फीसदी का इजाफा हुआ है।

## अधिकारी-कर्मचारियों को दिलाई सुशासन दिवस की शपथ

**भोपाल पूर्व प्रधानमंत्री भारत-रत्न से सम्मानित स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के एक दिन पूर्व मंगलवार को मंत्रालय में सुशासन दिवस मनाया गया। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य कुमार काश्यप ने मंत्रालय के सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में प्रातः 11 बजे अधिकारी और कर्मचारियों को सुशासन की शपथ दिलाई। शपथ के पहले उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. वाजपेयी के चित्र पर माल्यार्पण किया।**

सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को प्रदेश में सुशासन के उच्चतम मापदंडों को स्थापित करने के लिए, शासन को अधिक पारदर्शी, सहभागी, जन-कल्याण केन्द्रित और जवाबदेह बनाने के लिए हरसंभव प्रयास करने एवं प्रदेश के नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लक्ष्य को पाने के लिए सदैव तत्पर रहने की शपथ दिलायी। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव श्री संजय दुबे, सचिव श्री एम. सेल्वेंद्रन सहित मंत्रालय,सतपुड़ा एवं विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर ( म.प्र. ) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर ( म.प्र. ) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008